

আমি নিবন্ধিত
2524
ASIA ARCHIVES

४ पञ्चमोदकपात्रं त्रवा म हस्ति विधारिण

ॐ नमः श्रीगणेशाय नमः ॥ ॥ गणपतिं च हे रं व विष्णु राज विनायक ॥
देवि पुत्री महानेज महावर पराक्रमः ॥ १ ॥ मोहोदर महाकाय मेकदन्तं ग
जाननं ॥ खेतवर्णं महादिपं त्रिनेत्रं गणनायक ॥ २ ॥ अक्षमाला खदन्तं च
दक्षिणेन विधारिणं मृन्ना ना पुष्परत्नादेव नानागन्धा तुलेपनं ॥ ३ ॥ ना
गयज्ञो प्रवीतांग नानाविष्णु विनाशनं ॥ देवा सुर मनुष्याणां सिद्धिगन्ध
र्व वन्दितं ॥ ४ ॥ त्रैलोक्य विष्णु हन्तारं माया दूढं नमाम्यहं ॥ ॥ इति गण
पति स्तोत्रं समाप्तं ॥ ॥ पाणो यस्य वमोदकाक्ष विमलं दन्तं कुथारायुधं ॥
वज्राभं मदमन्त्रनागवदनं व्यालोचनितो ज्वलं ॥ यक्षान्द्रा सुरकिन्नरै सुनिग

देवस्य दावदितं वि ज्ञसं सतनं
मासि निरसा ॥ ज्ञासा ॥

रिप्रपन्नोस्मि गतिर्महात्मना ॥ ॥ अथार्थ ॥ अथ केरिश्च उने ले सुतिग
ने सागा. माहात्मा हूको गति मया को हरिकन म प्रनाम गच्छु त्रै लो का पित्त
र मया को चक्र गनु न उ न्या से वे कारण मा को उ न्य त्रि ग नी एत्ता कन प्रपन्नो
ने र हा धन ॥ ७ ॥ ॥ न कु लो वा च ॥ यति ग मन म धात्ता कर्म पासानु वं धा
॥ अदि च कु ल विहिने जायते पक्ष की ते ॥ कृमि शत म पि गता ध्या य ते च
न रात्मा भवतु मम हृदि स्थे केशवो भक्ति रे का ॥ ॥ अथार्थ केरि न कु
ल ले सुति ग या ॥ जो न का ल मा आ नु कर्म पास को व सा ले न र्क जानु प ली
अथ वा ही न कु ल मा भयो कित प्रक्षि को जो नि मा भयो कृमि वि से ष मा भ

मो. ताहाजानुप्रप्रापनि सदैहदयमा विराजमान मया को ॥ विष्णुको भक्ति
न बुझे ॥ ८॥ ॥ सहदेवोवाच ॥ यस्य जगत्परा हस्य विष्णोर्तुलने जसः
॥ प्रणामेय प्रबुधेति तेषां मयि न मो नमः ॥ ॥ अर्थ ॥ यह ते जसि
ज जगत्पराह को नमस्कार नो यह नमस्कार हो ॥ ९॥ ॥ कुत्पुवाच ॥ स्वकर्म
फलनिदृष्टं याम्यां यो विबुधा माह ॥ तस्यां तस्यां हृषीकेश त्वं भक्तिं ह
ठ्ठसु मे ॥ ॥ अर्थ ॥ आप्ण कर्मको फल विचार गरि कन को नै जान
मा जन्म दुख त सर्वे लामाहा प्रनि विष्णुके भक्त गुरु ॥ १०॥ ॥ मादिउवाच ॥ ३॥
कृपेता कृपामनुस्मरन्ति रात्रौ च कृपा पुनस्तथितम्य ॥ ते भिन्नदेहा

प्रविशन्ति कृष्ण हविरे यथा मंत्रं हुतं हुतात्ते ॥ ॥ अस्मार्थ ॥ कसेले श्री कृष्ण
राइ जो श्री तिसंग मन ला ध्यान गली रात दिने हुतात्मा प्रनि उथा मा प्रनि
परमेश्वर श्री कृष्ण को नाम स मुखे ध्यान मन्त्र गली रात दिने तस्मन्मुख्य क
न मोक्ष होला ॥ जसो गरिज जमा होम मा धृत पस्त्रिजाला तसे गरि पाप
प्रनि पगुलि जाला सत्य हो ॥ ११ ॥ ॥ दोष युवाच ॥ की तेषु प्रक्षीणु मृगेषु स
रीसृपेषु ॥ रक्ष पिशाच मनुजेषु पिडेव तत्र ॥ जातस्य मे भवतु केशव
त्वत्पसादा ॥ त्वय्येव भक्ति रचला य विचारिणी च ॥ ॥ अस्मार्थ ॥ हे पर
मेश्वर श्री कृष्ण मकन कीट पटंग विर राक्षस पिशाच मनुज्ये आदि

जाहा जन्म होला वाहा २ निश्चये ज्ञान ले तमा खरणासा प्रणाम गर्ना भई कन
भक्तमा विनागर्ना गरि दया प्रसन्न भै जायस ॥१२॥ ॥ सुभंदो वस ॥ एकोपि
दुष्टमद्य दत्त प्रणामो ॥ दशाशुमेधी नहि जाति तु सं ॥ दशाशुमेधी पुनरे
त्रिजन्म दुष्ट प्रणामि न पुन भवत्य ॥ ॥ अथार्थ ॥ जस मनुष्य से श्रीकृष्ण
को प्रणाम गर्ना तस मनुष्य कन दशाशुमेध जज्ञ गम्या वाहिपनि पाण्डवगी
तापाठ गरि गोविन्द को भजना गम्या वडो पुण्य छ ॥ मूर्ख से गोविन्द को भजना
छाडि जज्ञदान तीर्थ जात्रा गर्नु भं छन ॥ गोविन्द भजना गर्नु सका धैरे पुण्य छ ॥४॥
दशाशुमेध गम्या को फेरि गर्भ वास हुंदैन श्रीकृष्ण को प्रणाम गर्ना कन ॥१३॥

अभिमान्युवाच ॥ गोविन्द २ हरे मुरारे गोविन्द २ मुकुण्ड कान्त गोविन्द २
 योगदाने ॥ गोविन्द २ नमामि नमामि नित्यं ॥ ॥ अर्थ ॥ हे गोविन्द हे मु
 रारे हे मुकुन्द हे कान्त चक्रधर तमाचरण को दिन दिनै नमस्कार गर्नु द
 या प्रसन्न भया जावत ॥ १४ ॥ धृल च सुवाच ॥ श्रीराम नारायण बालुदे
 व गोविन्द वैकुण्ठ मुकुण्ड कान्त ॥ श्रीकेशवानन्द नृसिंह विष्णो मा श्री
 संसार भुजंग दृष्ट ॥ ॥ अर्थ ॥ हे नारायण हे बालुदेव हे मुकु
 ण्ड हे कान्त हे केशव ॥ हे अनन्त हे नृसिंह हे विष्णु यो संसार का काल स
 र्व का कारण मा जीवर का गर्नु चाहि ॥ १५ ॥ ॥ सात्वत सुवाच ॥ अपुनै

यहरे गिलो कचदा मोदरा च्युतः ॥ गोविन्दानन्त सर्वेश वासुदेवन मोल्लुते
॥ ॥ अर्थ ॥ परमेश्वर का रूप गुण की महिमा अथाह छन्द २२ ला श्री कृ
ष्ण दा मोदर अच्युत तेषा चरणानाम मत्कार ॥ ५६ ॥ ॥ उद्धवोवाच ॥ वासु
देवं परित्यज्य येन्य देवमुपासते ॥ तृषी तो जा क्रवी तीरे रूपं खणति दुर्म
ति ॥ ॥ अर्थ ॥ कौहिमनुष्यारे श्रीकृष्ण कान छडि अरु देवता को सेवा
गछेन ॥ उनै मूषहो गंगा को तीर मावसी कुलोतु लाई कुलो को पानि पाया
जलो ॥ ५७ ॥ ॥ धौम्योवाच ॥ अपाससी पेसयना सने गृहे ॥ दिवाचरात्रौ प
ठिगछताव ॥ यदिष्टि किंचित् सुकृतं कृतं मया ॥ जना हनतेन कृतेन तु य

तु॥ ॥ अस्थार्थ ॥ पानीकासमी प्रमातृ स्यात्का वाटा माघर माभयो दिनदिने
तमेवमस्यारब्धः एतौ धर्मा विचारगारि हेपर मेष्ट्वर तमुचिरणमा नमस्का
रं च संतुष्टं कुरुहेला ॥ १८ ॥ ॥ संजय उवाच ॥ आत्मी विषयानां लिङ्गानां
भीता घोरेषु व्याघ्रादिषु वर्तमाना ॥ संकीर्त्तनारायणशब्दमात्रं विमुक्तं
त्वा सुखिनो भवन्ति ॥ ॥ अस्थार्थ ॥ कोहिमनुष्यः दुःखी आलस्य विषयिण
स्यात्काकिनः रोगी मयापनि हरिको नाम सियापयि दुष्टशोकनाशभे सुख
प्राप्तिहेला ॥ १९ ॥ ॥ अकूर उवाच ॥ अहमस्मिन्नारायण दशदासः दास
सदासी स्मिहिदासदास ॥ ॥ अने भई शो जगतो न रानां तस्मादहं धन्यम

रोहिणी लोकाः ॥ ॥ अथार्थ ॥ हेनारायण तमराचरणको दास मङ्गनुपाडे
मलाइ गतिवक्तनुहवत्स ॥ धन्य २ मेरो भाग्यतपाइको चरणको दर्शनपा
श्री ॥ २० ॥ विडर उवाच ॥ वासुदेव परित्यज्योन्यदेवमुपासते नृषि
तोजक्रवीतीरि कूपं धननि दुर्मति ॥ ॥ अथार्थ ॥ हे विष्णु मन्त्रकावसमा
रहन्त्या श्रीकृष्ण तमराचरणको दास मङ्ग अन्तर्पनि तपात्रिको दास मङ्ग
॥ २१ ॥ विष्णु उवाच ॥ विपरीतेषु कालेषु परिक्षीणेषु बंधुषु ॥ अहिमांशु य
थावृत्तमशरणागतवत्सर ॥ ॥ अथार्थ ॥ हे कृष्ण जो विपत्रिकालमाभाइवं
धुं देखी, छुत्याकालमयमा तमराचरणसे मलाइ रक्षागनुवाहिछ ॥ २२ ॥ दो
णचार्य उवाच ॥ येद्येह तावत्कधरेण देत्यात्रैलोक्यनाथेन जनार्दननेन ॥

॥ ६ ॥

तेनेहताविष्णुपुरीप्रयाता॥ क्रोधोपिदेवस्यभरेणतुल्यं॥ ॥ अस्वार्थ॥ गोपि
जीतामगत्याका देवविष्णुसेमाया॥ उक्तोपनिस्वर्गवासनयो विष्णुकाक्रोधसे
मायाकापनिवरदानदियाकाजस्तोभयोभति॥ रत्नापरमेश्वरश्रीकृष्णकोवरण
मावारंवारनमस्कार॥ २३॥ ॥ कृपाचार्यउवाच॥ मज्जननिकलमिदंमधु
कैटभा॥ मत्पार्थनीयमदनुग्रहप्रयुग्व॥ त्वद्भृत्यभृत्यपरिवारकभृ
त्यभृत्य॥ भृत्यस्यभृत्यइतिमांस्मरलोकनाथं॥ ॥ अस्वार्थ॥ हेमंभुकेटभा
रपरमेश्वरजाहाजाहाहामौजन्महोलावाहावाहातंम्राचरणारवृन्दसे
कृपाराघनुहोलायतिश्रासमाहामिद्धोहेपरमेश्वर॥ २४॥ ॥ अश्वस्था
मोवाच॥ गोविन्दकेशवजगद्गनवासुदेव॥ विश्वेसविश्वमधुसूदनवि

श्वरूपं ॥ श्रीपद्मनाभपुरुषोत्तमदेहिदास्यं ॥ नारायणायुतनृसिंहनमो
नमस्ते ॥ ॥ अथार्थ ॥ हेगोविन्दकेशवजनार्दनवासुदेवमधुसूदनविश्व
रूपपद्मनेत्रनारायण ॥ अयुत-इरसिंह-वारंवारतपाईकाचरणमान
मत्कार-मलाइउच्चारगनुहोता ॥ २५ ॥ ॥ कर्णउवाच ॥ नान्यंवदामिनश्चि
त्रोमिनविन्नयामि-नान्यंस्मरामिनमजामिन्वाश्रयामि ॥ भक्तान्वदीय
चरणंबुजमाधरेण ॥ श्रीश्रीनिवासपुरुषोत्तमदेहिदास्यं ॥ ॥ अथार्थ
हेपुरुषोत्तमविष्णुमलाइतपाईकाचरणकोदासगारि राखनुहोस ॥
तपाईकाचरणारुन्दकाशेवागर्धुमेरोउच्चारगनुहोवसे ॥ २६ ॥ धृत
राखउवाच ॥ नमोनमकारणवामेनाथ-नारायणायमितविक्रमाय

श्रीसाङ्गचक्रासिगडाधराय नमोस्तुतस्मैपुरुषोत्तमाय ॥ ॥ अस्याय
पुणामनमस्कारगत्याकाप्रभावसेवामनरूपमेवारायणत्रिविक्रम
रूपधरत्रिसूत्रिचारंगगडाचक्रधारणागम्यैश्वर्यापुरुषोत्तमकी
गारंगारनमस्कार ॥ २७ ॥ ॥ गंधार्थपुवत् ॥ त्वमेवमातात्वपितात्वमेव
त्वमेववन्धुश्चसखात्वमेव ॥ त्वमेवविशाद्विभक्तत्वमेव त्वमेवसर्वमम
देवदेव ॥ ॥ अस्याष्टी ॥ हेपुरुदेवकोदेव मेरोसर्वैकर्मनपाइहोगि
नामाताभाईवन्धुसंगीविशाद्वत्सर्वैकनपाइहो मकनउधारगरिब
कतुरुवस ॥ २८ ॥ ॥ रूपदउवाच ॥ अज्ञसायुतगोविन्दमाधवान

न केशव ॥ कृष्णविष्णो हृषीकेश वासुदेवन मोक्षने ॥ ॥ अर्थ ॥ हे यज्ञ
ज्ञानन्द गोविन्द हे साधव हे अनन्त हे केशव हे श्री कृष्ण हे हृषीकेशव
हे वासुदेव ॥ यत्तापि रमेश्वर कन वार वार नमस्कार ॥ २९ ॥ जय इध उ
वाच ॥ नमः कृष्णाय देवाय ब्रह्मणे नन्न शक्तये ॥ योगीश्वराय योगाय त्वा
महं सरणी गतः ॥ ॥ अर्थ ॥ हे कृष्ण हे उद्धव रूप हे परब्रह्म हे अनन्त
मूर्ति हे योगेश्वर योग रूप नमो इकोचरणा मानमस्कार ॥ ३० ॥ वि
कर्ण उवाच ॥ कृष्णाय वासुदेवाय देवकी नन्द नाथ च ॥ नन्द गोप कुमा ॥ ८ ॥
राय गोविन्दाय नमो नमः ॥ ॥ अर्थ ॥ हे कृष्ण वासुदेव देवकी का पुत्र
नन्द का नन्द गोकुल मा विराजमान गन्धी राम कृष्ण गोविन्द भगवा का नमो ई

है हेपरमेश्वर वारंवार तपाई को नमस्कार छ ॥ ३१ ॥ ॥ सोमदत्त उवा
च ॥ नमपरमकस्या नमनिविश्वभावं वासुदेवाय शान्ताय यदुनां पतये
नमः ॥ ॥ अस्यार्थ ॥ हेपरमेश्वर हेपरमकस्याण हेविश्वभावन हेवासु
देव हे शान्त स्वरूप यत्ना का स्वामिका तपाई है यत्नात पाई कान को दि
नमस्कार छ ॥ ३२ ॥ ॥ विराट उवाच ॥ नमो ब्रह्मसंहरण देवाय गोब्रह्म
ण हिताय च ॥ जगद्धिताय कृष्णाय गोविन्दाय नमोनमः ॥ ॥ अस्यार्थ
हेब्रह्मण का भक्त देवता गोब्रह्मण का संसार का हीत श्रीकृष्ण गोवि
न्द तं भ्रावरण मानमस्कार छ ॥ ३३ ॥ ॥ शस्त्र उवाच ॥ अत सीपुष्प

संकासं पीतवासं समुच्युतं ॥ येन मस्य त्रिगोविन्दन तेषां विश्रुते भयं ॥ ॥
॥ अथार्थ ॥ तपा इवाव न संवे पीताम्बर पैरि रहन्ता अच्युत तपाईका चर
णमासवेले प्रणामागच्छिन् ॥ तन प्रणामी कनकसैको भयछेन ॥ ३४ ॥ व
लभ उवाच ॥ कृष्णकृष्णकृष्ण सोतु मगभीना गति भव ॥ संसार निवमग्य
ना प्रसीद पुरुषोत्तमः ॥ ॥ अथार्थ ॥ हे श्रीकृष्ण कृष्ण मयः यो संसा
र पापको समुद्र मा बुडि र ह्या मनुष्य कन. गति न गति दिन्हा हो ॥ ३५ ॥
श्रीकृष्ण उवाच ॥ कृष्णकृष्ण ति यो मां स्मरति नित्यं स ॥ जलं भित्वा यथा ॥ ३६ ॥
पद्मं नरका दुर्धराम्यहं ॥ ॥ अथार्थ ॥ कोहि मनुष्य ले श्रीकृष्ण ममि

दिनप्रतिस्मरणनामलिन्वाकन जस्तोरारि वानिवाट पद्मपत्रफिक
छन् तस्तेनर्वदेष्टि कि वैकुण्ठवासदिन्याहु ॥ ३६ ॥ श्रीकृष्ण उवा
च ॥ सत्यं वृवीमिमनुजास्यथ मुधैवाहु ॥ यो मां मुकुण्डनरसिंह उना
दनेति ॥ जीवजपत्यनुदिनं परणोरणेवा ॥ पाषाणकाष्ठसदृशायेददा
त्यभिष्ट ॥ ॥ अथार्थ ॥ हे लोक हे जस्ते मेरो नाम मुकुण्डनरसिंह उना
दन भनिध्यानगर्ली तस्केन सत्य हे वैकुण्ठवासमिली ॥ ३७ ॥ ईश्वर
उवाच ॥ सकृन्नारायणे त्युक्ता पुमान्कल्पशतत्रय ॥ गंगादितीर्थेषु
स्नानोत्तमतिपुत्रक ॥ ॥ अथार्थ ॥ जस्ते नारायणको नाम दिनप्रति

जम्न्यासाई बुलाको दर्शन पाया चाहिनि ॥ श्रीकृष्ण को ध्यावना गन्धा
बडो पुण्य ॥ ॥ ३८ ॥ ॥ शुक उवाच ॥ तत्रैव गंगा जमुना च तत्र ॥ गोडाव
री सिंधु सरस्वती च ॥ सर्वाणि तीर्थानि वसन्ति तत्र ॥ यत्रास्युतो ह्यरकथा
प्रसंगः ॥ ॥ अस्यार्थः ॥ जाह हरिकथा वाची रहं छन् ताहा गंगा जमुना स
रस्वती सवै तीर्थ ताहा आइ सुनी रहं छन् ॥ तव तस्था उमा कन्य प्रवित्र
भूमी भन्तु ॥ जशे अपवित्र भन्तु ला तस्कन नर्क वास होला ॥ ३९ ॥ ॥ य
म उवाच ॥ नरके पचमाने तु यमेन परिभाषितं ॥ किं त्वयानाविर्तो देव ॥ १०
केशव केशनाशतः ॥ ॥ अस्यार्थः ॥ जसे हरिकथा एक चित्र लाइ सु

रत्ना तस्कन नर्कवाट उच्चार होता ॥ ४० ॥ ॥ नारद उवाच ॥ जन्मान्तरस
हस्येण तपो ध्यान समाधिना ॥ नराणां क्षीनपापानां कृतिभक्तिप्रजाप
ते ॥ ॥ अथाथ ॥ कोहिमनुष्य कृतिभक्तिगर्ह्य ॥ पापीसाइभक्तिहुदे
न ॥ पापीसुखमापनिधनतुल्याउनाको इच्छागर्ह्य ॥ धनरे धर्महुदेन
कृतिभक्तिहुनामनुष्य दुखहुदेन मांछाहुंछ ॥ तस्को १ त्रमविना वहुते
दुखीहुंछ ॥ कृतिभक्तिनगनी सास्त्रनजान्यादन जाधर्महीला ॥ ४१ ॥
॥ प्रज्ञादउवाच ॥ नाथयोनि सहस्रेषु येषु ज्ञेयु वृजाम्यहं ॥ तेषु तेष्वा
वसाभक्तिरव्युतास्तु सदाचर्य ॥ ॥ अथाथ ॥ ह्यमू श्रीकृष्णकृष्णनेक

हजार २ जन्म जांछन् ताहात पाइको भक्ति गर्न सक्छा गरी दया प्रसन्न हुनु
होला ॥ ४२ ॥ पुन प्रह्लाद उवाच ॥ या प्रीतिरविमुक्तानां विमयेषु नृपा
यनी ॥ त्वामनुस्मरन्नाथा हृदयां नाम तर्पयन् ॥ अथार्थ ॥ हे परमेश्वर
श्री भगवान् तपाइको चरणमा मैले निश्चये भक्ति गर्नु सक न्या गरि द
या प्रसन्न गत्वा जावसु ॥ ४३ ॥ विश्वामित्र उवाच ॥ किं सदा नै किंती
ये किं तपो भि किं धनं ॥ यो नित्यं ध्यायते देवं नारायणं जगद्गुरु ॥ अ
थार्थ ॥ जस्मनुष्यले दिन पुति जगत् गुरु नारायणको ध्यान गर्नु सक
न्या कन तीर्थ स्नान यज्ञ गत्वा श्री कृष्णको ध्यान गत्वा को वडो पुण्य छ ॥ ४४ ॥

जमदग्निर्वाच ॥ नित्योत्सर्वसदातेषां नित्यश्रीनित्यमंगल ॥ येषां ह
दिक्षे भगवान् मंगलायतनो हरिः ॥ ॥ अस्थायी ॥ जस्मनुष्पले हरिकोना
म मंगलगावला ॥ तस्काहृदये मादृशले वासगर्भेन ॥ तस्कागृहे मासधै
शानन्द होला ॥ लक्ष्मि वृद्धिं धनं सदा मंगल होला ॥ ४५ ॥ ६ भास्वान
उवाच ॥ लाभक्षेत्रां जयक्षेत्रां कुरुक्षेत्रां पराजय ॥ येषां मिंदीवर
मोहदयस्थो जनादेन ॥ ॥ अस्थायी ॥ जस्कोहृदयफलजसो निम्न
लक्ष्मि ॥ तस्काहृदये माश्रीरुपवसुधेन ॥ तस्केन सदा जय होला ॥ ४६ ॥
गोतम उवाच ॥ गोकोटिदानग्रहणेषु काश्री प्रयाग गंगोदककल्प

ॐ

वासी यज्ञाशुतं मेरुसुवर्हादानं ॥ गोविन्दनामस्मरनेन तु स्यं ॥ ॥ अस्या
र्थे कोटिदानगत्याको ग्रहनमाकाश्रीमास्मानगत्याको पुंणपद्ध ॥ त्वोसर्वे प्रा
तसमये मा गोविन्दकोनाम जप्त्वाको वडो पुंणपद्ध ॥ ४७ ॥ ॥ अग्निरुवाच ॥
गोविन्देति सदा स्मानं गोविन्देति सदा जप ॥ गोविन्देति सदा ध्यानं सदा गोवि
न्दकीर्तनां ॥ ॥ अर्थ ॥ स्नानदानगर्दापनि गोविन्द जप्त्वा जयं गोविन्दको
गर्तु ॥ ध्यानपनि गोविन्दको गर्तु सदा सविदा गोविन्द जप्त्वा सकां छेरे पुण्य
॥ ४८ ॥ पुन अग्निरुवाच ॥ त्रियक्षरं परं ब्रह्म गोविन्देति त्रियक्षरं न
स्मादुच्चरिते येन ब्रह्म नृचाय कस्यते ॥ ॥ अर्थ ॥ कसैले प्रणा त्रे
यक्षर पाइकन ॥ उसैले मोदाइछ ॥ गोविन्दका त्रियेक्षर जप्त्वा दुःखप्र

॥ १२ ॥

हे कोशव हे हरी हे जाग संसार का गुरु **रुला परमेश्वर को नमस्कार ॥ ५२ ॥** ह
रि होत्र उवाच ॥ कृष्ण त्वदीय पदपंकजपंजरा नैऋत्यमेविशतुमानसरा
जहस प्राणप्रधानसमये कफवातपित्ते ॥ कण्ठावरोधनविधौ स्मरनं कुत
स्ते ॥ **अस्यार्थ** हे कृष्ण तिमिले वनाया को यो पिंजरा यैसे पिंजरा मा राज
हंस वस्थामा कफवात पित्तले ज्वर नया का समय मा वावा महता रि दाज्युभा
इष्ट मित्र कैसे से उद्धार गानु शकु धेन ॥ उद्धार गानो तपा श्री १ छे हे परमेश्व
र यत्ना श्री कृष्ण को वारं वार नमस्कार ॥ ५३ ॥ **विदुस उवाच** हरि नामैव नामै
व नामैव मम जीवनं ॥ कलौ नामैव नामैव नामैव गतिरन्यथा ॥ **अस्यार्थ** हे

परमेश्वर तपाई को नमस्कार को आलमा जीव मेरो छ ॥ अर्को को आलम है नमक
नतपाई को चरण को भक्त से मोक्ष मकन दयारा वनु हवस ॥ ५४ ॥ ५ ॥ वशिष्ठ
उगम्य कृष्णोति मंगल नाम यस्य वाचा प्रवर्तते ॥ भस्मीन भवनि तस्या सुमाहा
पातक को नय ॥ ॥ अर्थ ॥ जसमनुष्यले मंगल वनाई पति श्री कृष्ण को ना
म स्मरण कृष्ण मंगल वनाई छ तस्को पाप सवै भस्म हुं छ ॥ ५५ ॥ ॥ अहं धनु
वर कृष्णाय वासुदेवाय हरये परमात्मने ॥ प्रणत केशनाथाय गोविन्दा
य नमो नमः ॥ ॥ अर्थ ॥ हे कृष्ण भवनी नाम तिम्या केन पाप सवै छुति जांछ
जसमनुष्यले हरी को नाम मंगल गनी छ उस्को पाप सवै जसो वायु ते वाद
लुफा छ ॥ तसो पाप पनी उडि जांछ तसर्थ गोविन्द को नाम बार बार लिउ ॥ ५६

॥ कस्यप्रउवाच ॥ कृष्णानुस्मरणादेव पापसंघटपंजरं ॥ शतधा
नेदमाप्नोतिगिरिवजुहतोयथा ॥ ॥ अस्यार्थः ॥ श्रीकृष्णसाइप्रणाम
गन्धोमनुष्यको पापसंचनागत्याकोसर्वे जसैवजुले पर्वतघंडघंडग
ई पापघनितसैहोला ॥ ५७ ॥ इत्यो धनउवाच ॥ जानामिपापंनचमे
प्रवृत्तिः जानामिपापंनचमेनिवृत्तिः केनापिदेवानहदिस्थितेन ॥ यथा
नियुक्तोस्मिन्तथाकरोमि ॥ ॥ अस्यार्थः ॥ जुनजुनकर्मश्राकुलेगन्धो उ
ईफलहोला ॥ धर्मगत्याधर्मफलहोला पापगत्यापापफलहोला ॥ जो
कर्मछ स्वहेरिपरमेश्वरश्रीकृष्णकोनमत्कार ॥ ५८ ॥ पुनइत्यो धनउवा

लेसुखभोगदिह पत्तापरमेश्वरश्रीकृष्ण

४॥ यत्र स्वगुणदोषेन द्ये मया तां मधुसूदन ॥ अहमेव महं हंतु मम दोषो न
दीयते ॥ अत्यार्थ ॥ हे परमेश्वर श्रीकृष्ण तपाइ को गरायो मगधि मलाइ
दोष छैन हे मधुसूदन दोष लाया पनि न लाया पनि तपाइ काचर ऐमा छु
तपाइ कन वार वार नमस्कार ॥ ५२ ॥ ॥ भृगुस्वात्म ॥ नामैव तव गोविन्द ना
म स्तोत्र सताधिक ॥ ददात्युच्चारण मुक्ति भवानद्यां गयोगतः ॥ ॥ अस्या
र्थ कोहि परमार्थि न तत्त्वज्ञानी कन गोविन्द को नाम पांडव गीता एक स
य आठ आवत पाठ गरि ध्यान गत्वा अथोत्तर शय जज्ञ गत्वा को पुं न्य ऊं
॥ ६० ॥ ॥ लोमस उवाच ॥ नमामि नारायण पाद पंकजं ॥ करोमि नारा
यण पूजनं सदा वदामि नारायण नाम निर्मलं ॥ स्मरामि नारायण तत्त्वम

व्ययं ॥ अर्थ ॥ दिनप्रतिनारायणको निर्मित नामसिन्धु दिनप्रतिना
रायणका पावप्रश्नको नमस्कार गर्नु अविनाशी मंत्र ले जाय गर्नु ॥ ६१ ॥ सौ
नक उवाच ॥ स्मृते सकल कल्याण सांभजनं यत्र जायते ॥ पुरुषं स मज्जति न्य
वृजामिश्रणं हरिः ॥ अर्थ ॥ हरिको नामसिन्धु मनुष्ये कनसम
स्तकल्याण होला ॥ आत्मा आत्मा परमात्मा वशो वर विज्ञा ॥ यो मनुष्य ह
रिकाशरणमा जांछ ॥ ६२ ॥ गर्भ उवाच ॥ नारायणेति मंत्रोक्तिवासा
स्ति गतिरन्यथा ॥ तथापि नरेकेद्योरे पतंति शतमद्भुतं ॥ अर्थ ॥ को
हि मनुष्य वचनै पिछे नारायण जपछ मंत्र न जान्छा लाइ भक्त कन नक

जानुपदैर्न मंत्रनहुन्ना मूर्धकन नर्कवासमयो भनिका आश्रये ॥ ६३ ॥ दा
 लभ्यउवाच ॥ किंतस्य वहुनिर्मत्री भक्तिर्यस्य जनार्दन नमो नारायणायैति मं
 त्रसंघोर्ध साधकः ॥ अर्थ ॥ जस्य नुष्यते विष्णुभक्तिनगरि अह सर्व साध
 नागत्यापनिका प्रयोजन छ नमो नारायणो नाम विष्णुको जप्त्वर सर्व साधक हु
 न् ॥ अह संव्रजानाले का प्रयोजन छ जानिजन ले विष्णुको भक्ति ॥ ६४ ॥ ॥ वै
 संपायण उवाच ॥ यत्र योगेश्वर रूपो यत्र पाथो धनुर्धरः ॥ तत्र श्री विजयो भू
 ति कुवानीति मतिर्ममः ॥ अर्थ ॥ जाह जोगेश्वर ताह श्री कृष्ण हुन
 न ॥ जाह श्री कृष्ण वस्त्रन् ताह लक्ष्मी हुं छिन् लक्ष्मी मया काथा उमा स्थिर ॥ १६ ॥
 होला ॥ ६५ ॥ ॥ अंगिर उवाच ॥ हरि हर निपापानि दुष्ट चित्रैरपि स्मृत अनि

द्वयापि संदृष्ट्वा दहते व हि पावकः ॥ ॥ अथार्थः ॥ जस्मनुष्य लेभरिस
कगारि हरिको नाम जम्बु उस्को पाप जन्निह सवै भस्म होइ जाला ॥ ६६ ॥ प
रासर्थ उवाच ॥ सकुडुचुरिते येन हरि रित्य कर दय ॥ वद परिकर स्तेन
मोक्षाय गमनं पुति ॥ ॥ अथार्थः ॥ जस्मनुष्य लेभरिस कगारि तपाई
को नाम दुवै अक्षर हरी भनि ज प्रा केन उस्मनुष्य केन संसार का पाप को
हु लो नदी पार गारि सुख लेवै कुरा जा छन ॥ ६७ ॥ ॥ पौ लल्य उवाच ॥ हे जि
के रस सायन सर्वदा मधुर प्रिये ॥ नाय नाय मधिषु यं पिव जिह्वे निरं
तरं ॥ ॥ अथार्थः ॥ हे जिह्वा सदा काल मधुर वचन बोलनु छिचरो न ज

तु सदा का ले गोविन्द को निर्मल नाम मात्र सिद्ध नारायण का नाम ले मुक्त
ने वैकुण्ठवासिनी ॥ ६८ ॥ ॥ आस उवाच ॥ सत्यं सत्यं पुन सत्यं भुजमु
थाय बोधते न देवाय परं शास्त्रं न देव के श्रवात्परं ॥ ॥ अर्थ ॥ वि
द्वर को वचन सत्य र ग रि मान ॥ ज्ञानि जन ले विष्णु को भक्ति गर्तु विष्णु को ना
म भया को शास्त्र परं सुनु ॥ ६९ ॥ ॥ धन्वन्तरि उवाच ॥ अयुता नन्द गो
विन्द नामो वारुण भैषयान् नश्यन्ति सकल रोगान् सत्यं र व दाम्य हं
॥ ॥ अर्थ ॥ हे अयुत हे अनन्त हे गोविन्द तपात्री को नाम सिद्धा क
न धर्म कर्म दान तपश्चा अरु देवता को सेवा तीर्थ जानु पद्वैन श्री नारा
यण का नाम लोत्र ले धर्म कर्म श्री सधी पनि विष्णु को नाम सिद्धा पद्धि पा

पङ्कतः रोगसर्वैः कुत्रिभै वैकुण्ठवासि होला ॥ ७० ॥ ॥ मार्कण्डे उवाच ॥ साह
निर्दं महाछिद्रं साचांध जडमूकटा ॥ जन्मुज्जर्तक्षणांवापि वासुदेवनचि
नये ॥ ॥ अर्थः ॥ जश्ने स्वर्ग मोक्ष सुखदिन्या जगत्कायुरु हरिको
विन्ननागन्या साइ कागति होला ॥ ज्ञानिजन ले पाडौ गीता पाठ गरि सधे
भक्तगर्नुसक नासे घर मारा श्रीनम स्कार गन्या साइव डोयुं न्यछ ॥ ७१ ॥
॥ अर्थः ॥ अगस्त्य उवाच ॥ त्रिमिष्य त्रिमिषा द्वैवा प्राणिनां विष्णुविन्ननं ॥ क्रतु
कोटि सहस्राणि ध्यानमेकं विशिष्यते ॥ ॥ अर्थः ॥ जस्मनुष्मले वि
सुको स्तुति गरि ध्यान गछिन् ॥ उरसाइ कोटिय जगत्या को पुं एफ डं छ ॥
॥ ७२ ॥ ॥ वामदेव उवाच ॥ मनसा के स्मना वाचा यस्मिन्निज नोद नं ॥ त

त्रतत्र कुरुक्षेत्र प्रयागो नैमिषं वनं ॥ अस्थार्थ ॥ जाहा जाहा हरिकोव
था ऊँ छ ताहा कुरुक्षेत्र प्रयाग जमुना. कम साप नि सवे तीर्थ. सवे गंडकी
केडार. गंगा. पुष्कर नि. तेनी सकोटि देवता देवी गण. निमिखारं ए सवे.
आरेक न हरि कथा सुनिरहं छन ॥ ७३ ॥ अक उवाच ॥ शशि श सध्वं त्रा
स्त्राणि. चिचार्यो व पुन. पुन ॥ इदमेकं स मुत्पन्नं ध्येयो नारायण सदा अ
स्थार्थ ॥ मैले समस्त शास्त्र हेत्वा. पुराण सुन्या. विष्णु का ध्यान जति ठु लोके
हिरहे न छ ॥ तसर्थ सदा जानिले विष्णु को ध्यान गनु ॥ ७४ ॥ श्री महा
देव उवाच ॥ शरीरे जर्जरी भूते याधि गुत्ते कलेवरं ॥ औषधं जा क्रीवी तोय
वैद्यो नारायणो हरीः ॥ अस्थार्थ ॥ जश्ने विष्णु को ध्यान गर्ने सकला उ

स्कोशरीरसदासर्वदा निर्मलसुखं ॥ रोगाद्याथासर्वेनाशमैजांछ वैश्रपनिति
सुखं ॥ ७५ ॥ ॥ श्रीनकउवाच ॥ भोजनेच्छाडनेचिन्ता वृथा कुर्वन्निवेत्यवा
॥ योसौ विश्वं भरो देव सतक्रान्तु किमुपक्षते ॥ ॥ अर्थ ॥ भोजनगर्वा
मापनिजयविष्णुभक्तिः शरीरं नगरि साध्या मनुष्यको जन्मवृथा हो हरिक
था कहं दामा अकीर्तिर विन्नगरि राख्या मनुष्यनर्क जांछन् मनुष्यको
जन्मभैकान अति विष्णुको भक्तिनगरि रह्या लाइ कोउ प्रकार काउउ
टि होला ॥ ७६ ॥ एवं बुझाद यो देवा ॥ मय ये श्वन पोषनं श्री लोकरे
परमेश्वर नारायण कन श्रेष्ठ गारि राख्या छन् ॥ ७७ ॥ ॥ सनत्कुमार उवा
च ॥ यस्य हस्त्य गडाश्चक्रं गरुडो यस्य गोहनं शंखचक्र गडापद्म समै विष्णु
कीर्तयन्ति तुर्येश देव नारायण सदा ॥ ७८ ॥ तस्य अर्थ बुझा महेश्वर देवलोक तपोधन ५२

प्रसीदतु ॥ ॥ अथार्थ ॥ जप्ते शंखचक्र गडापद्म धारणागरि गरुड वाहना
री वल्गु नारायण कनन मत्कार गन्धी पाण्डव गीता पाठगर्भा को देह पवित्र कुं
छ ॥ आयुर्वृद्धि कुंछ वयो युष्मद् हेला धन धान्य दुःखा शरीर निर्मल दुःखा लो
कले मां न्या संग्राम कठिन न्या पापनाश दुःखा सान्निग न्या लुते हो ॥ ७८ ॥ इ
दं पवित्र मातुष्य पुण्य पाप प्रमात्रानं ॥ यः पठे प्रातरुत्थाय वैष्णव स्तोत्र मु
त्रमं ॥ ॥ अथार्थ ॥ कोहि मनुष्य रू प्रातरुठी शुचि नै आविष्णु को नमस्क
र गार पाण्डव गीता स्तोत्र पाठ गारि कसै ले पाठ गन्धा को सुनिरहं छ कसै ले ॥ ७९ ॥
पुस्तक तुल्या इराय दन् लेख न्या पङ्क न्या सुं न्या पुष्ट कतु त्या इ धर मारण्य

न्या. ईश्वरजनाकावरोवरपुण्यक. सुगभरिसदावर्तगत्याकोपुण्यदुन्द. यशोपुण्य
ले. हजारगौदानगत्याकोपुण्यदुन्द. हजारलिंगस्थापनागत्याकोपुण्यक. पापहरा
उन्द. विष्णुलोकजांछ॥ ॥ सर्वपापविनिर्मुक्तो. विष्णुसायुज्वमाप्नुयात्॥ धर्मार्थका
मसोदार्थ. पाण्डवेपरिकीर्तितं॥ ८०॥ अत्यार्थः॥ जज्ञेपाण्डवगीतायाठगरिभक्तिग
र्क. तप्तार्तत्कालैपुण्यदुन्द. पापमवैसोदनगरि. सत्यसत्यलेवैकुण्ठजांछन्॥ ॥
इतिश्रीपाण्डवकृत. पाण्डवगीतासंपूर्णम्॥ ॥ शुभम्॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
संवत् १२११ साल

॥ रामः॥
॥ २०॥

आशा अर्चना

2524

ASHA ARCHIVES